Date
Page

Discuss the Effects of the second world war on the British Economy.

प्रथम युद्ध की ही तरह द्वितीय महायुद्ध का भी ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था पर अत्यन्त प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

द्वितीय युद्ध के परिणाम प्रथम युद्ध की तुलना में काफी भयावह थे।

युद्ध प्रारम्भ होते ही देश के कुल साधनों पर सरकार द्वारा पूर्ण नियन्त्रण की नीति अपनायी गयी।

व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एक प्रकार से समाप्त हो गयी।

उद्योग-व्यापार, श्रम-संस्थानों तथा वाणिज्य-सम्बन्धी संस्थाओं को पूर्ण रूप से नियन्त्रित किया गया।

द्वितीय विश्व-युद्ध का अध्ययन निम्नलिखित है

1. आर्थिक क्षति :→ द्वितीय युद्ध से ब्रिटेन को महान आर्थिक क्षति हुई। बम, वाणिज्य पोतों को डुबाने तथा सैनिक क्रियाओं के कारण लगभग 9000 मिलियन पौंड धन की क्षति हुई।

इसमें लगभग 3000 मि० पौंड की घरेलु पूँजी नष्ट हुई।

युद्ध के कारण मकान, सड़क जहाज आदि सम्पत्ति बड़े पैमाने पर नष्ट हुई।

2. विदेशी कर्जो में वृद्धि :→

युद्ध के समय अपने भुगतान संतुलन को ठीक करने तथा युद्ध संचालन के लिए ब्रिटेन को विदेशों से विदेशी ऋण के रूप में 300 मि० पौंड लेना पड़ा।
युद्ध के बाद इस ऋण के भुगतान की समस्या प्रमुख रह गयी।

3. विदेशी विनियोग में कमी : →

युद्ध के पूर्व विदेशों में इंगलैंड के विनियोग बहुत अधिक थे। युद्ध के समय में खाद्यान्न तथा कच्चे माल की पूर्ति के लिए विदेशी विनियोगों को सुरक्षित रखा गया। युद्ध के समय में लड़ाई सम्बन्धी वस्तुएँ खरीदने के लिए ब्रिटेन ने 1000 मि० पौंड का अपना विदेशी विनियोग बेच दिया। इंगलैण्ड की विदेशी आय में कमी हुई। 1938 ई० में विदेशी विनियोगों की आय से वह अपने कुल आयात के 21 प्रतिशत मूल्य का भुगतान करता था जबकि 1947 ई० में यह प्रतिशत केवल 3 ही रह गया।

4. व्यापार पर प्रभाव : →

व्यापार पर भी द्वितीय विश्व युद्ध का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। विदेशों में कच्चे माल के मूल्यों में वृद्धि हुई। मूल्य वृद्धि के कारण अब ब्रिटेन को युद्ध का खर्च पूरा करने के लिए 20% से भी अधिक निर्यात करना पड़ता था। आयात में अब कमी करनी पड़ी। युद्ध की समाप्ति के बाद तो इनका निर्यात युद्ध के पूर्व का केवल एक तिहाई

भाग दी रह गया।
युद्ध के परिणामस्वरूप संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य डॉलर-क्षेत्रों पर ब्रिटेन की निर्भरता में बहुत अधिक वृद्धि हुई।

5. कृषि पर प्रभाव :—→ युद्ध के पूर्व ब्रिटेन अपनी कुल खाद्यान्न की आवश्यकता का प्रायः 70 प्रतिशत भाग विदेशों से आयात करता था। गेहूँ तथा मक्खन जैसी वस्तुओं के सम्बन्ध में तो यह 99 प्रतिशत तक आयात करता था।
युद्धकाल में विभिन्न कारणों से खाद्यान्न तथा कच्चे पदार्थों की पूर्ति के लिए विदेशों पर ब्रिटेन की निर्भरता में बहुत अधिक कमी आ गयी।
ब्रिटेन के लिए एक मात्र रास्ता देश में ही कृषि की उपज में वृद्धि करना रह गया तथा सरकार ने कृषि-विकास के लिए हर सम्भव प्रयास प्रारम्भ किये।

6. उद्योग-धन्धों पर प्रभाव :—→ द्वितीय विश्व-युद्ध का ब्रिटिश उद्योगों पर पूरा प्रभाव पड़ा। सूती वस्त्र उद्योग पर युद्ध का सर्वाधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
सर्वप्रथम तो इस उद्योग को श्रमिकों की कमी का सामना करना पड़ा।
सुधार के लिए 1939 ई० में एक Cotton Industry Board संगठित किया

गया।
युद्ध के कारण उद्योग में श्रम-शक्ति का अभाव हो गया।

7. यातायात पर प्रभाव : ⟶

युद्ध का प्रभाव यातायात पर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। लड़ाई के समय में जहाजों की कमी अनुभव की गयी। 1939 ई० में इंगलैण्ड के पास 74,00,000 जहाज थी 1947 ई० में केवल 1,33,00,00 रह गयी। बहुत से जहाज शत्रु द्वारा डुबो दिये गए।
रेलवे की भी स्थिति खराब थी। सरकार रेलवे कम्पनियों को 450 लाख पौंड वार्षिक मुआवजा करती थी। युद्ध के कारण रेलवे से अधिक-से-अधिक काम लिया गया।

8. ~~बेरोजगार~~ : ⟶
रोजगार पर द्वितीय युद्ध का प्रभाव : ⟶

युद्ध के पूर्व ब्रिटेन में बेरोजगारों की संख्या बहुत अधिक थी। युद्ध-काल में उत्पादन में वृद्धि की आवश्यकता पड़ी जिससे धीरे-धीरे रोजगार के साधनों में भी वृद्धि होने लगी तथा शीघ्र ही कुशल श्रमिकों का अभाव अनुभव किया जाने लगा।
संख्या में वृद्धि की

अन्य प्रभाव :→

द्वितीय युद्ध काल मे देश के आर्थिक जीवन पर सरकार के नियन्त्रण मे बहुत अधिक वृद्धि हुई। युद्ध आरम्भ होते ही नये मन्त्रालयो का निर्माण किया गया।

जैसे :- Home security, Economic welfare, Information, Shopping, Food, Aircraft, Production आदि।

धीरे - धीरे अधिकार दिया जाने लगा।

युद्ध आरम्भ होते ही मूल्य तल मे वृद्धि होने लगी जिससे परिणाम स्वरूप मजदूरी मे वृद्धि की मांग की जाने लगी।

मजदूरी मे वृद्धि को रोकने के लिए सरकार ने आवश्यक समाग्रियो के मुल्य को आर्थिक सहायता द्वारा स्थायी बनाने का प्रयास किया।

द्वितीय महायुद्ध का ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था पर बहुत ही प्रतिकुल प्रभाव पड़ा।

प्रथम तथा द्वितीय विश्व-युद्धो ने ब्रिटेन की अर्थ-व्यवस्था को अस्त-ग्रस्त कर ~~इसकी~~ आर्थिक तथा राजनैतिक सर्वोच्चता को समाप्त कर दिया।

ग्रीन ठीक ही कहा है कि "दोनो विश्व-युद्धो के बीच वाले समय मे ब्रिटेन को अपने इतिहास मे सबसे बड़ी मन्दी का सामना करना पड़ा। युद्धो मे यह छिपी रहा। राजनीतिक प्रभाव तथा आर्थिक शक्ति का ह्रास हुआ"।